अनुक्रमणिका

आभार

प्रस्तावना

अध्याय-प्रथम

गोंडी लोकसाहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना
1.2 गोंडवाना गोंडी साहित्य का अर्थ
1.3 गोंडवाना गोंडी साहित्य का उद्गम और ऐतिहासिक आधार
1.4 गोंडी भाषा की लिपि
1.5 गोंडी साहित्य स्वरुप और पृथकता
1.6 गोंडी साहित्य की दिशा एवं अस्मिता
1.7 गोंडी साहित्य का ऐतिहासिक काल संघर्ष
1.8. गोंडवाना गोंडी साहित्य और समाज
1.9 गोंडी साहित्य की ऐतिहासिक अवस्था और उत्क्रांति
1.10 गोंड जनजाति में सगा समाज व्यवस्था
1.11 गोंडी साहित्य में विवाह और स्त्री का स्थान
1.12 स्त्रियों को सम्पत्ति का अधिकार और नियंत्रण
1.13 गोंडी लोकसाहित्य में समाज पंचायत
1.14 गोंडी साहित्य में धार्मिक श्रद्धा और संस्कार
1.15 गोंडी संस्कृति एवं कला की पृष्ठभूमि
1.16 गोंडवाना इतिहास और शासनकाल
1.17 गोंडी धर्मियों का गोंडवाना शासन काल
1.18 उध्वस्त गोंडीयन समाज जीवन की दशा एवं दिशा

अध्याय-द्वितीय

नारीवादी शोध प्रविधि

2.1 नारीवादी शोध क्या है?
2.2 नारीवादी शोध प्रविधि में साक्षात्कार
2.3 नारीवादी शोध प्रविधि में प्रश्नावली
प्रथम स्त्रोत
द्वितीय स्त्रोत

अध्याय-तृतीय

अध्ययन क्षेत्र परिचय

प्रस्तावना-

भारत एक विशाल देश है, जिसमें अनेक विविधताएं है। आदिकाल से ही यह विभिन्न धर्मों, मतों के सम्प्रदायों, सांस्कृतियों, प्रजातियों, जातियों, और आदिवासी की कर्मभूमि रहा है। भारत की संपूर्ण जनसंख्या द्वारा निर्मित है 2001 के जनगणना के अनुसार भारत में आदिवासियों कि जनसंख्या 8.35 करोड़ हो गई है। अनेक दुर्गम क्षेत्रों में आज भी अनेक ऐसे मानव समूह पाए जाते हैं जो पिछले सैकड़ों वर्णों से शेष संसार की सभ्यता के दूर रहकर अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पहचान बनाए हुए हैं। इस मानव समूहों का लिखित इतिहास सामान्यत: उपलब्ध है। ऐसे मानव समूह को आदिवासी, कबीली, आबादी, आदिमवासी तथा आदिवासी जैसे नामों से पुकारा गया है। यह शब्द अंग्रेजी भाषा के नेटिव 'एब्रोरिजनल' तथा ट्राइब शब्दों के ही अनुवाद है। इन लोग के 'वन्य जाति' वनवासी गिरिजन, आदि नामों से भी संबोधित किया जाता कि ये भारत के प्राचीनतम निवासी माने जाते हैं। 'वेरियर डल्विन', एबोरिजनल ओनर्स आदीम जाति के नाम से संबोधित करते हैं।

आदिवासी गोंड ऐसा समाप्त जिसके नाम से ही उसकी पहचान छिपी हुई है। आदिवासी गोंड इस भूमि के मूल निवासी हैं। इस मूलनिवासी की आज की स्थिति इतनी दयनीय है कि उसे भोजन के लिए पेट भर अन्न नहीं, शरीर को वस्त्र नहीं, रहने के लिए आवास नहीं यानी सभी जीवनात्मक वस्तुओं के अभाव में इनकी जिन्दगी दयनीय, अवस्था से गुजर रही है। इन मूलभूत सुविधाओं और आवश्यकताओं के अभाव के कारण यह समाज गरीब, शोषित, पीड़ित लाचार बना हुआ है।

'इम्पीरियल गजेरियर ऑफ इंडिया' (Imperial Gazetteer of India) के अनुसार एक आदिवासी परिवारों का संकलन है, जिसका एक नाम होता है, जो एक

बोली बोलती है, एक सामान्य भूभाग पर अधिकार रखती है या अधिकतर जताती है और जो प्राय: अंतर्विवाह नहीं करती है।

'हबल, चार्ल्स विनिक, रॉल्फ पिडिंग्टन' ने आदिवासियों को परिभाषित करते हुए कहा कि एक विशेष भाषा, सांस्कृतिक समरुपता तथा एक सूत्र में बंधने वाला सामाजिक संगठन बनके रहता है। सामाजिक उपसमूहों जैसे गोत्रों या गांवों को सम्मिलित कर सकता है गोंड आदिवासी समाज की इस तरह विशेषताएं होती है। आदिवासी गोंड मूल निवासी है और उनकी संस्कृति लोकतांत्रिक है।

"भारत देश में लगभग 700 अनुसूचित जनजातियां है।" उनमें 75 को आदीम आदिवासियों का समूह के रूप में पहचान की गयी। आदीम जनजातीय समुदायों की पहचान निम्न जनसंख्या, निम्न शिक्षा एवं प्राक्-कृषि तकनीक के आधार पर किया गया है। जिन आदिवासियों की जनसंख्या बहुत कम है, उनके लघु आदिवासी के लिए एवं विशेष कार्यक्रम चलाया गया है। भारत के 2001 के जनगणना के आधार पर आदिवासियों की जनसंख्या का 8.1 प्रतिशत भाग हमारे आदिवासी बंधू द्वारा निर्मित है। हमारे देश की आदिवासी हिमाचल क्षेत्र, मध्यभारत, दक्षिण भारत तथा द्वीप समूहों में पाई जाती हैं। कुल जनजातियां जनसंख्या का आधा भाग मध्य भारत क्षेत्र में पाया जाता है। इस क्षेत्र के राज्यों का नाम मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल है। 12 राज्यों एवं केंद्र शासित राज्यों तथा आदिवासी जनसंख्या एक मिलीयन से अधिक है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली राज्यों तथा केन्द्र शासित चंड़ीगढ़ एवं पांडिचेरी में आदिवासी जनसंख्या का अभाव पाया जाता है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र उड़ीसा, झारखंड, गुजरात तथा राजस्थान में प्रत्येक में आदिवासियों की जनसंख्या पांच मिलियन से अधिक है। मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में अकेले ही 15.4 मिलयिन आदिवासी रहती है। इन दोनों राज्यों को मिला देने से इसमें आदिवासी

जनसंख्या का प्रतिशत 22.7 हो जाता है। मणिपुर में सर्वाधिक आदिवासी जनसंख्या 94.75 प्रतिशत पायी जाती है। उत्तर प्रदेश में सबसे कम आदिवासी जनसंख्या (0.21 प्रतिशत) पायी जाती है। भील, मीणा, गोंड, तथा संथाल प्रत्येक की जनसंख्या अकेले तीन मिलयिन से अधिक है।

1991 की जनगणना के अनुसार संसार के 30 करोड़ मूल निवासियों में से 66 करोड़ 70 लाख 60 हजार मूल निवासी भारत में रहते है। वे भारत के 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैले हुए हैं। उत्तर पूर्वी भारत को छोड़कर उनका फैलाव एक समान नहीं बल्कि ये देश भर में अलग-अलग स्थानों पर जमा हैं।

ये मुख्यत: जंगलों, पहाड़ी इलाकों में बसे हुए हैं जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा है। कुल आदिवासी ऐसे भी हैं। जिनके सजातीय देश के बाहर बंगाला, देश, भूटान, वर्मा, चीन और तिब्बत में पाए जाते हैं। आदिवासियों का जमाव मौटे तौर पर 66 क्षेत्र में है। मध्य प्रदेश, द्वीप क्षेत्र, उत्तर पूर्वी क्षेत्र, और पश्चिमी क्षेत्र।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोंडी लोक साहित्य सही मायने में अपनाने की जरूरत है। क्योंकि गोंडी लोकसाहित्य एक उच्चकोटि के रूप में दिखाई देता है, गोंडी लोकसाहित्य नारीवादी दृष्टि से देखा जाये तो नारी को एक शक्ति के रूप में देखते है, बल्कि अबला नारी नहीं उसे पूरी तरह स्वतंत्रता और समानता का अधिकार गोंडी लोकसाहित्य में दिया है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में 'गोंड लोकसाहित्य में नारीवादी अध्ययन' इसमें गोंडी लोकसाहितय का उद्गम, स्वरुप दिशा देने का प्रयास किया है। अत: इस शीर्षक का चुनाव करके यह शोक कार्य संपन्न किया गया। इस अध्ययन को प्रस्तावना, उपसंहार के बाद चार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में मैंने गोंड, आदिवासियों का अध्ययन कियाहै।

प्रथम अध्याय में प्रस्तावना देकर गोंडी साहित्य का अर्थ दिया है। फिर गोंडी लोकसाहित्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में गोंडी लोकसाहित्य में क्या-क्या बदलाव हुए और उसमें नारी को क्या महत्व दिया गया है। यह बताया गया है।

द्वितीय अध्याय में नारी शोध प्रविधि क्या है। ये बताने का प्रयास कियाहै, उसमें वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाएं कितनी आगे बढ़ी है ये दिखाया गया है। नारीवादी शोध प्रविधि में साक्षात्कार का क्या महत्व है, प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। उसमें तथ्यं संकलन एवं द्वितीय स्त्रोत जोड़ा गया है। तृतीय अध्ययन में: आर्वी तहसील के आदिवासियों का अध्ययन : वैयाक्तिक अध्ययन किया है। जिसमें गोंड आदिवासियों के बारे में विस्तारित वर्णन किया है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में आदिवासियों की स्थिति जो रहन-सहन, शारीरिक स्िथति और सांस्कृतिक स्थिति की चर्चा की गई है। आखिर इन सब कारणों का पता लगाने को कोशिश की गई है, कि गोंडी लोकगीत तथा लोककथाएं के द्वारा गोंडी महिलाएं क्या संदेश देना चाहती है। यह सब बताने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय में मैंने गोंड जनजाति में लोकसाहित्य का स्त्रीवादी दृष्टिकोण बताया गया है। उसमें गोंड आदिवासियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में लिया गया है। जिसमें उद्भव एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आदिवासियों की परिभाषा, गोंड आदिवासियों का भौगोलिक वर्गीकरण, भाषीय वर्गीकरण एवं आर्थिक विभाजन, आदिवासियों को विशेषताएं बताई गयी है। फिर आदिवासी स्त्री के बारे में क्या क्या विशेषताएं है, ये बताया गया हैं। उनके संस्कृति के बारे में बताया गया है। साथ ही साथ उनके लोकगीत और लोककथाएं में क्या नारीवाद दृष्टिकोण है ये बताया गया है।

परिशिश्ट-1 वैयक्तिक अध्ययन में कुछ साहित्यिकों का साक्षात्कार दिया गया है। महाराष्ट्र में गोंडी साहित्य उभरने की जरूरत है, आर्वी तहसील में महिलाओं का लोकगीतों के माध्यम से दिया हुआ संदेश जो हमारा साहित्य समाज के सामने लाने की

कोशिश कर रहे आखिर क्या जरूरत है जो इतने सालों से छुपा हुआ साहित्य अभी धीरे धीरे उभर रहा है। उस पर चर्चा की गई है।